विषय- संस्कृत, बी० ए० स्नातक (प्रतिष्ठा)
तृतीय वर्ष, सप्तम पत्र
काव्यदीपिका - द्वितीयशिखा
वाक्य का स्वरूप

डॉ० ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा
दिनांक - 29/09/2020

वाक्यस्वरूपमाह -

अन्विते कार्यबोधे तु वाक्यं पदसमुच्चयः
पदानां सार्थकत्वेऽपि तेषामर्थो नान्वितः,
वाक्यन्तु तदन्तर्गतपदार्थसमुदितमेकमर्थं
बोधयति। यथा- "जननी सुताऽऽननं
सस्नेहमीक्षते"।

अर्थ-

श्रीकान्तिचन्द्र भट्टाचार्य प्रथमशिखा में काव्यप्रयोजन एवं काव्यलक्षण का प्रतिपादन करने के बाद द्वितीय शिखा में वाक्य एवं पदादि के स्वरूप का वर्णन करते हुए लिखते हैं- अन्वित -अन्वय-

विशिष्ट - एक अर्थ को बताने में समर्थ पदों के समूह को वाक्य कहते हैं।

अर्थबोधक पदसमूह को वाक्य कहते हैं, यदि ऐसा वाक्य लक्षण करते हैं तो गौः, अश्वः, पुरुषः इत्यादि पद समूह को भी वाक्य मानना पड़ेगा ('गौ' इत्यादि पदों में प्रत्येक के सार्थक होने के कारण। किन्तु 'अन्वित - अन्वयविशिष्ट पदार्थ' इस विशेषण के ग्रहण कर लेने पर 'गौ' इत्यादि पदसमूहों में अन्वय-विशिष्ट पदार्थ के बोधक न होने के कारण वाक्यत्व की प्राप्ति नहीं होती। इसी को श्रीकान्तिचन्द्र जी 'पदानां सार्थकत्वे' --- आदि वाक्यों के द्वारा व्यक्त करते हैं -

पदों में प्रत्येक के सार्थक होने पर भी उनका अर्थ अन्वित नहीं होता। अर्थात् वे अन्वयविशिष्ट पदार्थ के बोधक नहीं होते, केवल अन्वयरहित पदार्थ के बोधक होते हैं। किन्तु वाक्य अपने अन्दर आए हुए पदों के अर्थों को मिलाकर परस्पर अन्वयविशिष्ट करके समुदाय रूप में एक अखण्ड अर्थ को बताता है। जैसे - 'माता पुत्र के मुख को स्नेह-पूर्वक देखती है।

संस्कृत व्याख्या -

वाक्यार्थज्ञाने पदार्थज्ञानं

कारणमिति न्यायेन काव्यस्वरूप प्रतिपादक-वाक्यार्थज्ञानाय तद्घटकार्थ पदावल्योः स्वरूपं परिज्ञायमितुं द्वितीयां शिखामारभते।
तत्र पदावली नाम वाक्यमिति पूर्वं व्याख्यातम्। अर्थवाक्ययोरन्न वाक्यस्य श्रुतिगोचरत्वेन प्रथमोपस्थितत्वात् पूर्वं तदेव लक्षयति- अन्विते कार्यबोधे - अन्वितस्य अन्वयविशिष्टस्य, एकस्य अखण्डस्य, समुदितस्य वा, अर्थस्य बोधे बोधजनने, समर्थः, पदसमुच्चयः - पदानाम, समुच्चयः, समुदायः, वाक्यम्- इति व्यपदिश्यते। यथा- 'रामो ग्रामं गच्छति' इति वाक्यम। अत्र हि रामः, ग्रामम, गच्छति - इति त्रीणि पदानि सन्ति। एतेषां पदार्थानाम आकांक्षा-योग्यता- सन्निधिवशात् परस्परमन्वयो भवति। तत्र रामपदार्थस्य गच्छतिपदार्थान्तर्गत-कर्तृपदार्थेन सहाभेदेनान्वयः, ग्रामवृत्तिकर्मत्व-रूपस्य ग्राममिति पदार्थस्य च गच्छतिपदार्था-न्तर्गतव्यापारेण सह निरूपकत्व सम्बन्धेना-न्वयः। तथा च रामाभिन्नैक कर्तृक वर्तमान-कालिक ग्रामवृत्ति कर्मत्वनिरूपक संयोगानुकूल-व्यापार इत्येको वाक्यार्थः फलति।
स चोक्तरीत्या अभेद निरूपकत्वान्वय-विशिष्टः। तद्बोधकत्वाच्च 'रामो ग्रामं गच्छति' इति पदसमुदायस्य वाक्यत्वम।